|  |
| --- |
| 07. September 2025 |
| **23. Sonntag im Jahreskreis C** |
| Erste Lesung: Weih 9,13-19; Zweite Lesung: Phlm 9b-10.12-17; Evangelium: Lk 14,25-33 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 416, 1+2 | Was Gott tut |
|  | GL 418, 1+3 | Befiehl du deine Wege |
|  | GL 81, 1+4+5 | Lobet den Herren |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 437 | Meine engen Grenzen |
|  | GL 130 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 131 | Ehre sei Gott in der Höhe |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 90, 3-6.12-14 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 64, 1 | Die ihr ihn fürchtet |
|  | oder |  |
|  | GL 428, 1+4 | Herr, dir ist nichts verborgen |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Lass dein Angesicht leuchten über deinem Knecht,.* |
|  | *Und lehre mich deine Gesetze* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 456 | Herr, du bist mein Leben |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 140, 1-3 | Kommt herbei, singt dem Herrn |
|  | GL 440 | Hilf, Herr meines Lebens |
|  | GL 460 | Wer leben will |
|  | GL 461, 1-3 | Mir nach |
|  | GL 474, 1-4 | Wenn wir das Leben teilen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 132 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 133 | Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 275, 1+2+4 | Selig, wem Christus |
|  | GL 424, 1+3 | Wer nur den lieben Gott |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 382, 1+4+5 | Ein Danklied sei dem Herrn |
|  | GL 409 | Singt dem Herrn ein neues Lied |
|  |  |  |
|  |  |  |